संत शिरोमणि श्री नामदेव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

भक्ति संप्रदाय के प्रणेता संत नामदेव का नाम भारत की उन महान विभूतियों में एक है, जो

श्रीमद्भगव**दगी**ता में वर्णित व्यवस्थानुसार समय–समय पर धर्म के उत्थान एवं मानव जाति के कल्याण के लिए पृथ्वी पर अवतीर्ण होते हैं। "हरि अनंत–हरि कथा अनंता" उक्ति के अनुसार संत नामदेव का जीवन वृत्त विविध आख्यानों, घटनाओं तथा अलौकिक चमत्कारों से परिपूर्ण हैं।

संत नामदेव का जन्म विक्रम संवत 1327 में कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी यानी देवोत्थान एकादशी को सूर्योदय के समय पंढरपुर ;महाराष्ट्रद्ध में हुआ था। आपके पिता का नाम दामासेठ तथा माता का नाम गोणा बाई था। जन्म के बाद 11 वें दिन आपका नामकरण संस्कार करवाया गया और तब आपका नाम 'नामदेव' रखा गया।

नामदेव के समय में दिल्ली में मुस्लिम शासक राज कर रहे थे। उत्तर भारत में खिलजियों के सैनिक शासक भावी योजनाऐं बना रहे थे। अलाउद्दीन खिलजी के कानों में देवगिरी के यादव राजाओं के वैभव की कहानियां गूंज रही थी। वह दक्षिण द्वार पर रहकर समय की प्रतीक्षा कर रहा था। देश का तत्कालीन सामाजिक जीवन भी अजीब तरह का था। सामान्य जनता जाति पांति की जंजीरों में जकड़ी हुई थी। वर्ण व्यवस्था का पालन कठोरता से हो रहा था। संत, महात्मा तथा अन्य विचारशील व्यक्ति सामाजिक विषमता का अनुभव करने पर भी इसे विधि का विधान मान रहे थे।

तत्कालीन समय में महाराष्ट्र में नाथ और महानुभाव पंथों का प्रचलन बहुत अधिक था। नाथ संप्रदाय योग परक साधना का समर्थक था, जबकि महानुभाव सम्प्रदाय कर्मकाण्ड तथा बहुदेव उपासना का विरोधी होते हुए भी **कृ**ष्णोपासक होने के कारण मूर्तिपूजा को सर्वथा निषि(नहीं मानता था। संत नामदेव ने दोनों पंथों की सारगर्भित बातों को अपनाया और पंढरपुर में भगवान विट्ठल की उपासना की। महाराष्ट्र की आम जनता का आकर्षण भी पाण्डुरंग भगवान विट्ठल के प्रति ही अधिक था। विट्ठल भक्तों का पंथ 'वारकरी' कहलाता था। वहां आज भी आषाढ़ एवं कार्तिक मास की एकादशी पर विशाल धार्मिक यात्राएं आयाजित होती है, जिनमें विट्ठल भक्तों का अपार समूह उमड़ पड़ता है।

कहा जाता है कि नामदेव जब दो वर्ष के थे, तभी से भगवान विट्ठल का नाम उच्चारित करने लगे थे। पांच साल की आयु में तो वे विट्ठल–विट्ठल कहते हुए नृत्य भी करने लगे थे। तदनन्तर वे विट्ठल भगवान के अनन्य भक्त हुए। उनके माता–पिता भी विट्ठल के ही परम भक्त थे। उन्हीं का प्रभाव बालक नामदेव पर पड़ा था। बाल भक्त नामदेव के गुरू संत बिसोबा खेचर थे। उन्होंने नामदेव को गुरू दीक्षा देकर परमात्मा के दर्शन का मार्ग बताया था। संत नामदेव प्रत्येक जड़ चेतन में प्रभू सत्ता का अश मानते थे। नामदेव के पिता ने अपने पुत्र की अनन्य भक्ति भावना से किंचित यह विचार किया कि कहीं भक्ति की ओर अधिक उन्मुख होने से यह गृहस्थ जीवन के प्रति वैराग्य भाव ही नहीं अपना ले। अतः दामासेठ ने बाल्यावस्था में ही नामदेव का विवाह भी कर दिया था, परन्तु गहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भी नामदेव के भक्तिभाव में कोई कमी नहीं आई। अर्थात् गृहस्थ जीवन और घर की दरिद्रता उन्हें विट्ठल से विलग नहीं कर सकी।

संत नामदेव का जीवन काल सन् 1270 से 1350 का समय इतिहास में बहुत अर्थपूर्ण काल रहा है। इस अवधि में महाराष्ट्र में ही नहीं, अपितु सारे भारत में संतों ने भक्ति मार्ग की नीवं डाली तथा समाज को दिग्दर्शन करवाया। संत नामदेव ने तत्कालीन समाज में फैली विषमताओं, रूढ़िवादिता, ऊँचनीच, जाति पाँति के भेदभाव, धार्मिक कट्टरपंथ आदि को मिटाने का प्रयास किया। ईश्वरीय आराधना क भिन्न–

भिन्न मार्गों के प्रति समादर भाव के सर्वोच्च नैतिक मूल्यों को स्थापित किया, जो वर्तमान में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। नामदेव के बाद कबीरदास, रामानंद, गुरूनानक, रैदास, गरीबदास आदि संतों ने भी उन्हीं की परम्परा का अनुसरण कर लोक शिक्षण, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना की। उनकी मान्यता थी कि ईश्वर एक ही है और सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी एवं पूज्यनीय है।

संत नामदेव ने बाह्य आडम्बरों से दूर रहने का उपदेश दिया। वह अनेक निर्गुण पंरपराओं को सम्मान देने तथा अनुकरणीय मानने के साथ सगुण उपासना के भी अनुयायी रहे। महाराष्ट्र में पंढरपुर में विराजमान विट्ठल देव को अपना जीवन समर्पित किया। उन्होंने उत्तर भारत को भी अपने आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति रस से लाभान्वित किया। संत ज्ञानेश्वर के आव्हान पर नामदेव उनके साथ अपने तीन शिष्यों चोखामेला, सावंता माली और नरहरि सुनार को लेकर उत्तर भारत की तीर्थ यात्रा पर गये। अनेक स्थानों की यात्रा करते हुए लौटते वक्त राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में भी आए तथा बीकानेर के समीप महात्मा कपिल मुनि की तपोभूमि कोलायत तीर्थ का दर्शन कर पुण्य अर्जित किया। उत्तर भारत की यात्रा के दौरान ही वह पंजाब में गुरूदासपुर के समीप घुमान भी गये और जंगल में कुटिया बनाकर वहां प्रचार केन्द्र स्थापित किया। वहां आज भी नामदेव का स्मृति मंदिर है। विद्वानों का मत है कि अंतिम वर्षों में नामदेव अपनी दूसरी उत्तर भारत यात्रा पूर्ण कर पंढरपुर आ गये थे और 80 वर्ष की अवस्था में आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी शाके 1272, विक्रम संवत 1407, तदनुसार दि. 3 जुलाई 1350 ईस्वी में सपरिवार समाधि ली।

संत नामदेव के उपदेश संत साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। आपने काव्य की अभंग छन्द शैली में लोक शिक्षण का कार्य किया। संत नामदेव के अभंगों का महाराष्ट्र में आज भी प्रातः और सायं गीता की तरह पाठ किया जाता है। गुरू ग्रंथ साहिब में भी आपके 61 अभंग रागब(कर सम्मिलित किये गये हैं, जिन्हें मुखबानी कहा जाता है।

संत नामदेव के उपदेश मानवजाति के विकास एवं जनहितार्थ रहे हैं। उनके प्रमुख उपदेश आज भी उतने ही सार्थक प्रतीत होते हैं, जितने तत्कालीन समय में होते थे। जाति–पांति का भेद मिटाकर एकता से रहना, मानव मात्र के साथ समभाव रखकर सभी के साथ सच्ची नम्रता का व्यवहार करना, सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर सदैव उसका आचरण करना, संपूर्ण मानव जीवन परजन हिताय व्यतीत करना, निष्पक्षता, स्पष्टवादिता, उदारता तथा दृढ़ इच्छा शक्ति से ईश्वरीय सत्ता स्वीकार कर जीवन यापन करना, सभी धर्मों के प्रति समादर भाव रखना, सत्संग, सत्कर्म एवं संकीर्तन से ईश्वरीय तत्व की प्राप्ति कर आत्मा के उ(ार करने का प्रयास करना, चूंकि बिना सच्चे गुरू को कृपा से जीवन अपूर्ण रहता है, अतः गुरूदीक्षा लेकर आदर्शों पर चलना, प्राणी मात्र में ईश्वरीय तत्व का अनुभव कर सभी से स्नेह, दया और सहानुभूति रखना आदि अनेक अनमोल उपदेश नामदेव द्वारा प्रस्तुत किये गये, जो संत साहित्य की अनमोल धरोहर है।

इनके अतिरिक्त भी आहार की सात्विकता, कर्म की सात्विकता, प्राणी मात्र से प्रेम रखना, छल कपट को त्यागकर मर्यादा में चलना, छुआछूत एवं ऊँच नीच की भावना को कलंक मानना, सद्गुरू का उपदेश मानना, साकार एवं निराकार दोनों मार्गों को श्रेष्ठ मानना, लेकिन भक्ति मार्ग एवं नाम संकीर्तन को सरतलम मार्ग मानना, परोपकारिता, तुलसी माला धारण करना, एकादशी का व्रत रखना तथा जीवन में एक बार पंढरपुर की यात्रा ;वारिद्ध बैकुण्ठपुर मानते हुए करना आदि उपदेश उस महान संत की महानता के द्योतक है, जिनका हम आज भी यथा संभव अनुसरण कर उस महात्मा को सच्ची **श्रद्धांजलि** अर्पित कर सकते है।